I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन की सामाजिक एवं शैक्षिक उपयोगिता: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

महेन्द्र कुमार[1]*

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *महेन्द्र कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14623810

सारांश

दर्शनशास्त्र की शुरुआत अस्तित्व के प्रति जिज्ञासा से होती है। भारतीय दर्शन प्राचीनकाल से ही जीवन के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या करता रहा है और अपने अंदर कई धाराओं को समाहित किये हुए है। इन दर्शनों में जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन का विशेष महत्व है। इन सभी का भारतीय समाज, संस्कृति और शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ा है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं बातों को रेखांकित करते हुए जैन और बौद्ध दर्शन की सामाजिक एवं शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में करने का प्रयास करता है। साथ ही, इसमें दोनों दर्शनों के शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण पद्धतियों, नैतिक मूल्यों और उनकी सामाजिक उपयोगिता के संदर्भ में समानताओं और भिन्नताओं को समझने का प्रयास किया गया है। यह शोध पत्र दोनों दर्शनों की नैतिकता, अनुशासन, मूल्य शिक्षा, शिक्षण विधियों और उद्देश्यों पर आधारित है। इस शोध पत्र में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 19-11-2024
- **Accepted:** 26-12-2024
- **Published:** 09-01-2025
- **IJCRM:**4(1); 2025: 06-10
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

महेन्द्र कुमार, जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन की सामाजिक एवं शैक्षिक उपयोगिता: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2025;4(1): 06-10.

मुख्य शब्द: दर्शनशास्त्र, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, सामाजिक उपयोगिता, शैक्षिक उपयोगिता

परिचय

भारतीय संस्कृति और दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक ही सीमित नहीं है, बल्कि नैतिकता, आत्मा की पवित्रता और समाज का कल्याण भी होता है। जैन और बौद्ध दर्शन लगभग एक ही समय में उभरे और शैक्षिक सिद्धांतों को गहराई से प्रभावित किया। दोनों दर्शनों ने शिक्षा को ध्यान, नैतिकता और अनुशासन के माध्यम से जीवन के उच्चतम लक्ष्यों, जैसे मोक्ष या निर्वाण, को प्राप्त करने के साधन के रूप में देखा है।

जैन दर्शन:

जैन धर्म भारत के प्राचीन धर्मों में से एक है। इसकी स्थापना उत्तरी भारत में हुई और यह पूरे भारत में फैल गया। जैन धर्म 24 तीर्थंकरों के साथ शाश्वत है। जैन धर्म महावीर की शिक्षाओं पर केंद्रित है। जैन धर्म में अहिंसा का सिद्धांत सबसे महत्वपूर्ण है। यह कहता है कि व्यक्ति को सभी हिंसक गतिविधियों को त्याग देना चाहिए और अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए। जैन धर्म न केवल कर्म में अहिंसा सिखाता है बल्कि वाणी में भी अहिंसा पर विश्वास करता है।

जैन दर्शन की सामाजिक उपयोगिता:

जैन दर्शन भारतीय चिन्तन और आध्यात्मिक जीवनशैली का प्रतिनिधि दर्शन है। इसके सिद्धान्त शाश्वत और चिरनवीन है, जो समसामयिक तथा प्रासंगिकता की कसौटी पर सदा खरे उतरे हैं। ये प्राचीन काल में जितने आवश्यक थे, उतने ही आधुनिक युग में भी हैं। इसका कारण यह है कि जैन संस्कृति का दर्शन पक्ष जितना समृद्ध है, उतना व्यावहारिक भी है। इसके सिद्धान्त मौलिक और अनेक विलक्षणताओं को अपने आप में समेंटे हुए हैं। जैन संस्कृति का मूल आधार आचार में अहिंसा, व्यवहार में अपरिग्रह तथा विचार में अनेकान्त है। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त- ये तीन जैन दर्शन की ऐसी विशेषताएँ हैं, जो समाज में व्याप्त

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

हिंसा, संग्रह की मनोवृत्ति और अपने मत का दुराग्रह रूप जो समस्याएँ हैं, उनका समाधान करती है। जैन आचार का मूल आधार आत्मा है। संसारी अवस्था में कर्मों से बंधी होने के कारण उसके अनेक भेद-प्रभेद हो जाते हैं। सही दिशा में पुरुषार्थ करके व्यक्ति अपने अशुभ कर्मों को शुभ में बदल भी सकता है। जैन दर्शन हर घटना का मूल कारण कर्म को ही नहीं मानता, पाँच समवाय को मानता है। इन पाँच कारणों में कभी कोई प्रमुख तो कोई गौण हो सकता है।

आज के तार्किक विश्व में जैन धर्म हर चीज़ की लॉजिक सहित व्याख्या करता है। महावीर ने जीने के उपाय बताए वे जैन जीवनशैली के महत्वपूर्ण अंग है। महावीर का पहला सूत्र था- हमारे जीवन में घृणा का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। इसका अर्थ है कि एक आदमी दूसरे आदमी के साथ समानता का व्यवहार करे और घृणा का त्याग करें इससे मनुष्य और मनुष्य के बीच आपसी सद्भाव और प्रेम को बढ़ावा मिलेगा। जैन जीवन शैली का दूसरा सूत्र है- शांतवृति। जीवन में आवेश न हो, उतेजना न हो। जैसे को तैसे की भावना न हो। प्रारम्भ से ही बच्चे में ऐसे संस्कार निर्मित हो जिससे कि शांतिपूर्ण जीवन जीने के सुख का रहस्य वो समझ जाएं। आज समस्या ये है कि लोग छोटी छोटी बातों में आवेश में आ कर न सिर्फ अपना बल्कि अपने परिवार का जीवन भी कष्टमय बना देते है। जैन धर्म सिखाता है कि मन की शांति को जीवन में कैसे उतारे। हमारी जीवनशैली ऐसी हो, जिसमें हमें कर्तव्यों का भान हो, पर आवेश का भूत सिर पर सवार न हो। शांतवृति का प्रयोग जैन जीवन शैली का महत्वपूर्ण सूत्र है। इसको व्यवहारिक रूप में अमल में लाने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं रहता। अगर घर में शांति हो तो उन्नति अपने आप होगी, बच्चे संस्कारवान होंगे, कलहपूर्ण वातावरण में बच्चे के कोमल मन में जो घाव पनपते है वो जीवन पर्यंत नहीं भरते हैं।

जैन जीवनशैली का तीसरा रूप है- श्रममय जीवन जीना, श्रमयुक्त जीवन जीना। गांधीजी ने श्रम स्वावलंबन को व्रत के रूप में स्वीकार क़िया। प्रश्न है कि इसका मूलस्रोत कहाँ है? इसका मूलस्रोत है- श्रमण परंपरा। भगवान महावीर ने स्वावलंबन पर बहुत बल दिया। उत्तराध्ययन सूत्र में स्वावलंबन से होने वाली उपलब्धियों का वर्णन है। श्रम और स्वावलंबन जैन धर्म के मुलसूत्र है। जिस व्यक्ति के जीवन में श्रम और स्वावलंबन नहीं होता क्या वो वास्तव में आत्म कर्तव्य के सिद्धान्त को सही अर्थ में स्वीकार करता है।

जैन जीवनशैली का चौथा सूत्र है- अहिंसा। पुराने जमाने में जैन लोग बहुत ही अभय थे, युग की शताब्दियों में ये क्रम बदला और थोड़ा भय व्याप्त हो गया। पहले क्षत्रिय लोग जैन ज्यादा थे। जैन धर्म मूलतः क्षत्रियो का धर्म था, यह व्यापारियों का धर्म नहीं रहा। जैन धर्म पराक्रम का धर्म था। अधिकांश तीर्थंकर क्षत्रिय ही थे। जब यह क्षत्रियो से व्यापारियों के हाथ में आया, अभय का विकास धीरे धीरे कम होता गया।

सम्राट चंद्रगुप्त का समय देखे उन्होंने सभी जैन राजाओ को एकता के सूत्र में पिरो रखा था। हिंदुस्तान आपसी झगड़ों ओर फुट के कारण परतंत्र बना। हिंसा की वजह से सम्पूर्ण विश्व में विध्वंसकारी स्थिति बनी हुई है, ऐसे में जैन धर्म का अहिंसा का सिद्धान्त न केवल जैन धर्मावलंबियों के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए कल्याणकरी है। श्रावको को ये संकल्प लेना चाहिए कि किसी भी हिंसा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेंगे। आत्महत्या, भ्रूण हत्या आदि का आंकड़ा समाज में बढ़ रहा है, जो व्यक्ति जैन जीवनशैली को मानता है वो कभी भी ऐसा नहीं करेगा। इतना ही नहीं वो क्रूरतापूर्ण तरीके से बनी हिंसाजनक प्रसाधन सामग्री का इस्तेमाल नहीं करेगा। जैन जीवन शैली का पांचवा सूत्र है- इच्छा परिमाण। इच्छाओं का कोई अंत नहीं, वे असीमित है, शायद विश्व की इस विध्वंसक स्थिति का कारण ही मनुष्य का न खत्म होने वाला लालच है, मनुष्य ने किसी को नहीं छोड़ा, न ही वनों को, न जंगली जानवरों को, न समुंद्री प्राणियों को। इस प्रकार जैन दर्शन मनुष्य की इच्छाओं और लालसाओं को सीमित करने पर बल देता है। जैन जीवनशैली का छठा सूत्र है- व्यसन मुक्त जीवन जीना। जैन जीवनशैली से जीने वाला व्यक्ति कभी भी जुआ नहीं खेलेगा, नशीले पदार्थों से दूर रहेगा। जैन धर्म वर्तमान संदर्भ में जितना प्रासंगिक है उतना शायद पहले भी नहीं था। जैन धर्म का मूलमंत्र जिओ और जीने दो है। आज के इस हिंसक, भोग विलास और इन कारणों से प्रदूषित युग में जैन धर्म सम्पूर्ण विश्व को अहिंसक जीवन शैली, भोगों के कारण होने वाले नुकसान और पर्यावरण रक्षा करना सिखाता है। इस दुनिया के विवादों का झगड़ो का हल स्यादवाद में ही है। अणुबम के डर का निवारण जैन धर्म के अणुव्रतों से हो सकता है। दूसरे धर्म सिर्फ अपने अनुयायी या सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की बात करते है; जबकि जैन धर्म समस्त जीव सृष्टि के कल्याण और रक्षा की बात करता है।

जैन धर्म का समाज उद्धार में योगदान:

जैन धर्म और उस समय के वैदिक धर्म कई मायनों में एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। समय के साथ, वैदिक धर्मों ने सख्ती, दृढ़ता और रूढ़िवादिता का व्यवहार किया, जिसके कारण उच्च जाति के हिंदुओं पर ब्रह्मा का शासन स्थापित हुआ, जबकि निचली जातियाँ दुख में फंसी रहीं। दूसरी ओर, जैन धर्म की शिक्षाएँ जाति और पंथ की परवाह किए बिना सभी के लिए खुली थीं। जैन धर्म के तीन रत्नों की अपनी विचारधारा और नैतिकता के साथ, अर्थात् उचित ज्ञान के साथ सत्य का अनुसरण करना, अन्य जीवों को नुकसान न पहुँचाने का उचित आचरण और प्रकृति के अनुसार जीवन जीना, उन्होंने आम लोगों का दिल जीत लिया। और इस प्रकार, जैन धर्म ने भारतीय संस्कृति के धार्मिक आचरण को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे वैदिक शिक्षाओं पर गहरा आघात लगा। जैन धर्म के योगदान को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। मुख्य रूप से, जैन धर्म आम लोगों, निचली जातियों और पंथों की मदद करने पर केंद्रित है। जैन धर्म के विभिन्न योगदान और प्रभाव साहित्यिक निर्माण, दार्शनिक विकास, राजनीति पर प्रभाव, सामाजिक परिवर्तन और जैन धर्म की कलात्मक और स्थापत्य विरासत के माध्यम से प्रकट हुए हैं।

जैन दर्शन की शैक्षिक उपयोगिता:

जैन दर्शन का आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है इस दर्शन के अनेक सिद्धांत शिक्षा के महत्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत करते हैं जिनमें अहिंसा, नैतिकता, सदाचार का पाठ और अनुशासन आदि पक्ष शामिल हैं इस प्रकार जैन दर्शन की शैक्षिक उपयोगिता वर्तमान संदर्भ में भी प्रासंगिक है। इसके महत्वपूर्ण आयाम निम्नलिखित हैं:-

जैन दर्शन: शिक्षा का दृष्टिकोण

जैन दर्शन "अहिंसा परमोधर्मः" के सिद्धांत पर आधारित है। इसकी शिक्षा प्रणाली जीवन के छह प्रमुख आयामों पर ध्यान केंद्रित करती है:-

1. **नैतिक शिक्षा**: जैन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में नैतिकता, अनुशासन और सदाचार का विकास करना है।
- अहिंसा (हिंसा न करना)

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- सत्य (सच्चाई का पालन करना)
- अचौर्य (चोरी न करना)
- ब्रह्मचर्य (संयम)
- अपरिग्रह (संपत्ति की मोह-मुक्ति)

2. **ज्ञान और आत्मा का विकास**: जैन दर्शन शिक्षा को आत्मा के ज्ञान और मोक्ष प्राप्ति का साधन मानता है।
- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और कर्मों से मुक्ति है।
- 'सम्यक् ज्ञान', 'सम्यक् दर्शन' और 'सम्यक् आचरण' को शिक्षा के मुख्य स्तंभ माना गया है।

3. **शिक्षण विधियाँ**:
- ध्यान और आत्म-निरीक्षण का महत्व।
- गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा और आध्यात्मिक अनुशासन का पालन।
- वर्ण, अवस्था और क्षमता के अनुसार शिक्षा का प्रावधान।

4. **सार्वजनिक शिक्षा और सामाजिक प्रभाव**: जैन शिक्षा प्रणाली समाज में अहिंसात्मक और सह-अस्तित्व की भावना का विकास करती है।

5. **पर्यावरण संरक्षण और अहिंसा की शिक्षा:**
जैन शिक्षा प्रणाली पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहन प्रदान करने के साथ-साथ जीव मात्र के प्रति अहिंसा के पालन का भी सन्देश देती है।

6. **आत्म-शुद्धि और आत्म-अनुशासन का विकास:**
जैन शिक्षा प्रणाली मनुष्य की आत्मा की शुद्धि का आव्हान करती है और आत्म अनुशासन को बढ़ावा देती यही ताकि व्यक्ति संयमित जीवन जी सके।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया:- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत मुख्यतः तीन बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है जो निम्नलिखित हैं:-
- सशिक्षा का पाठ्यक्रम
- सशिक्षण विधि।

शिक्षा का पाठ्यक्रम:
जैन दर्शन के पाठ्यक्रम में वनस्पति, शारीरिक संरचना इतिहास, सामाजिक परिवर्तन, भौतिक परिवर्तन आदि का समावेश किया गया है।

जैन दर्शन की प्रमुख शिक्षण विधियां:-
जैन दर्शन की प्रमुख शिक्षण विधियों में (1) निसर्ग विधि, (2) अधिगम विधि, (3) निक्षेप विधि, (4) प्रमाण विधि, (5) नयविधि, (6) स्वाध्याय विधि, (7) प्रश्नोत्तर विधि, (8) पाठ विधि, (9) श्रवण विधि, (10) पद विधि, (11) पदार्थ विधि, (12) उपक्रम विधि, (13) व्याख्या विधि, (14) शास्त्रार्थ विधि, (15) प्ररूपणा विधि, (16) कथा, रूपक, तुलना एवं उदाहरण विधि तथा (17) संगोष्ठी विधि प्रमुख हैं।

प्रशासन और अनुशासन:
जैन दर्शन में शिक्षा का अर्थ, स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यक्रम शिक्षण विधियाँ इत्यादि निर्धारित कर लेने के पश्चात शिक्षा व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष सम्पूर्ण शिक्षा योजना को कार्यरूप में परिणत करने की योजना है। इस उप-शीर्षक पर विचार किया जाना आवश्यक है:-
- गुरु शिष्य संबंध
- अनुशासन का स्वरुप

गुरु शिष्य संबंध:-
गुरू एवं शिष्य के सुमधुर सम्बन्ध एक-दूसरे के विकास के साथ ज्ञान को भी विकसित करने में सहायक होते हैं। जैन दर्शन में विनय और गुरू भक्ति पर बल दिया गया है।

अनुशासन का स्वरुप:
अनुशासन के दृष्टिकोण से जैन दर्शन में कठोर रूख अपनाया हुआ हैं जिसका पालन प्रत्येक अनुयायी होता है। जैन धर्म के अनुयायी अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के पांच महाव्रतों का पालन करते हैं। ये व्रत न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाजिक जीवन में भी एक आदर्श जीवन शैली की नींव के रूप में महत्वपूर्ण हैं।
वर्तमान समय में भी उनके उपदेशों में विश्व की सभी समस्याओं का निराकरण करने की अनूठी क्षमता है। जैन धर्म के प्रसार में भगवान महावीर की शिक्षाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके उपदेशों ने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में लोगों को एक नैतिक और आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी है। उनकी शिक्षाओं ने लोगों को आत्म-साक्षात्कार की ओर अग्रसर किया है और एक अधिक समझदार और संवेदनशील समाज की नींव रखी है। इनका शैक्षणिक महत्त्व भी हैं जिससे शिक्षण-अधिगम से संबंधित पाठ्यक्रम निर्धारित किए जा सकते हैं।

बौद्ध दर्शन:
बौद्ध दर्शन गौतम बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित एक भारतीय दर्शन है। इसका प्रचार-प्रसार चौथी से छठी शताब्दी के बीच हुआ। बौद्ध दर्शन में गौतम बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित कई परंपराएँ, मान्यताएँ और प्रथाएँ शामिल हैं। जैसा कि चार आर्य सत्यों में बताया गया है, बौद्ध दर्शन इच्छा और वास्तविकता की अज्ञानता के कारण होने वाले दु:खों पर काबू पाने की शिक्षा देता है। बौद्ध दर्शन की लिपियों की साहित्यिक भाषा मुख्य रूप से पाली और संस्कृत भाषाओं में पाई जाती है।

बौद्ध दर्शन की सामाजिक उपयोगिता
बौद्ध दर्शन एक ऐसा विचारधारा है जो मानवीय मूल्य, नैतिकता और आत्म-ज्ञान पर आधारित है। यह दर्शन न केवल आध्यात्मिक उत्थान के लिए प्रासंगिक है, बल्कि सामाजिक और व्यावहारिक जीवन में भी इसकी गहन उपयोगिता है। बौद्ध दर्शन की शिक्षाएं समाज को नैतिकता, सहिष्णुता और शांति का मार्ग दिखाती हैं। यह दर्शन व्यक्ति को आत्म-चिंतन और समाज को समता एवं सह-अस्तित्व की ओर प्रेरित करता है। आधुनिक युग की समस्याओं का समाधान करने में इसकी उपयोगिता अनमोल है। बौद्ध धर्म ऐसे नियमों का संग्रह है जो हमें यथार्थ के सही स्वरूप को पहचान कर अपनी संपूर्ण मानवीय क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करता है। बौद्ध दर्शन में परस्पर निर्भरता, सापेक्षता और कारण कार्य संबंध-जैसे विषयों के बारे में चर्चा की जाती है।

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

महात्मा बुद्ध ने अपने धर्म में सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक और राजनीतिक स्वतंत्रता व समानता की शिक्षा दी है। बुद्ध ने सांसारिक दुखों के संबंध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया था। ये आर्य सत्य बौद्ध धर्म का मूल आधार हैं। इसके साथ ही, सांसारिक दुखों से मुक्ति के लिए बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग पर चलने की बात कही। आष्टांगिक मार्ग के साधन हैं- सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मांत, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि। मध्यम मार्ग का उपदेश देते हुए बुद्ध ने कहा कि "मनुष्य को सभी प्रकार के आकर्षण और कायाक्लेश से बचना चाहिए"। अर्थात, न तो अत्यधिक इच्छाएं करनी चाहिए, न ही अत्यधिक तप (दमन) करना चाहिए, बल्कि इनके बीच का मार्ग अपना कर दुख-निरोध का प्रयास करना चाहिए।

बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था:

बौद्धकालीन शिक्षा का अर्थ:- बुद्ध के अनुसार शिक्षा एक ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो मनुष्य को लौकिक एवं पारमार्थिक दोनों जीवन के योग्य बनाती है। उनके अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है, जो मनुष्य को निर्वाण की प्राप्ति कराये।

बौद्धकालीन शिक्षा के उद्देश्य:- लौकिक दृष्टि से मनुष्य के शारीरिक, बौद्धिक, चारित्रिक, नैतिक तथा आर्थिक विकास पर बल दिया है और पारमार्थिक दृष्टि से मनुष्य के निर्वाण की प्राप्ति के लिए चार आर्य सत्यों, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग और त्रिरत्न की उपलब्धि पर बल दिया है।

बौद्ध दर्शन: शिक्षा का दृष्टिकोण:

बौद्ध दर्शन, जो "चार आर्य सत्य" और "आष्टांगिक मार्ग" पर आधारित है, शिक्षा को मानव जीवन के विकास का माध्यम मानता है।

1. **नैतिक शिक्षा**: बौद्ध शिक्षा प्रणाली में नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान है।
- शील (अनुशासन)
- समाधि (ध्यान)
- प्रज्ञा (ज्ञान)

2. **शिक्षा का उद्देश्य**:
- दुःखों से मुक्ति (निर्वाण) प्राप्त करना।
- छात्रों में करुणा, मैत्री, और शांति का विकास करना।
- शिक्षा को सामाजिक न्याय और समानता के लिए उपयोग करना।

3. **शिक्षण विधियाँ**:
- संवाद (डायलॉग) और चर्चा का महत्व।
- ध्यान और बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन।
- भिक्षु शिक्षा प्रणाली, जिसमें शिक्षकों और छात्रों का सरल जीवनशैली अपनाना।

4. **समाज और शिक्षा**: बौद्ध शिक्षा प्रणाली समाज में समरसता, भाईचारे, और हिंसा-मुक्त वातावरण का निर्माण करती है।
- तनाव प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य में ध्यान की भूमिका।
- करुणा और समानता पर आधारित शिक्षा।

बौद्धकालीन शिक्षा का पाठ्यक्रम:- पाठ्यक्रम में कुछ विषय धार्मिक प्रकृति के थे, जिनका आधार आलौकिक था। कुछ विषय लौकिक आधार पर आधारित थे। धार्मिक पाठ्यक्रम भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के लिए था, इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य निर्वाण प्राप्त करना था। इस पाठ्यक्रम में चार आर्य सत्यों का पूर्ण ज्ञान था। बौद्ध विहारों में चार विद्याओं शब्द विद्या, शिल्पासन विद्या, चिकित्सा विद्या एवं आध्यात्मिक विद्या। लौकिक पाठ्यक्रम साधारण लोगों के लिए था। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य स्त्री-पुरूषो को समान रूप से अच्छा नागरिक बनाना था। पाठ्यक्रम में सामान्य विषय, कला कौशल, व्यावहारिक विषय थे।

बौद्धकालीन शिक्षा के स्तर:- शिक्षा के दो स्तर थे। प्राथमिक स्तर तथा उच्च स्तर।

प्राथमिक स्तर पर लिखना-पढ़ना तथा साधारण गणित का अध्ययन कराया जाता था। उच्च स्तर पर धर्म, दर्शन एवं चिकित्सा आदि का ज्ञान दिया जाता था।

बुद्धकालीन पाठ्य सहगामी क्रियाये:- पाठ्यक्रम में पाठ्य सहगामी क्रियाओ को सम्मिलित किया गया था, जिनमें चौपड़, रेखा-चित्र बनाना, गेदं खेलना, तुरही बजाना, हल चलाने की नकल करना, रथों की दौड़ एवं धनुष-बाण प्रतियोगिता आदि थे।

बौद्धकालीन शिक्षा में अनुशासन:- गुरु एवं शिष्य दोनों संघ के आश्रित होते थे। संघ की सत्ता सर्वोपरि थी। प्रत्येक शिक्षक एवं शिक्षार्थी को संघ के नियमों का पालन करना पड़ता था। संयमी जीवन को अनुशासन माना जाता था।

बौद्धकालीन शिक्षा में शिक्षक:- शिक्षक वह हो सकता था, जिसने चार आर्य सत्यों को जान लिया है और जो अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करता है, 10 वर्ष के अनुभवी भिक्षु ही शिक्षा दे सकते थे। शिक्षक शुद्ध आचरण, पवित्र विचार, विनम्रता और मानसिक क्षमता से परिपूर्ण होता था।

बौद्धकालीन शिक्षा में शिक्षार्थी:- शिक्षार्थी मठ तथा बिहारों में अपने माता-पिता की आज्ञा से शिक्षा ग्रहण करते थे। ऐसे विद्यार्थी को प्रवेश नहीं मिलता था, जो संक्रामक रोग से पीड़ित हो, घोर नैतिक अपराधी हो, अविनम्र, दुराचारी एवं पलायनकर्त्ता आदि हो। संघ में प्रवेश के समय विद्यार्थी को दस आदेश दिये जाते थे। ये दस आदेश 'दस सिक्खा पदानि' कहलाते थे। प्रत्येक छात्र को इनका पालन करना होता था।

बौद्धकालीन शिक्षा में विद्यालय:- बौद्धकालीन षिक्षा मठों और बिहारों में चलती थी। ये ही इस समय के विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय थे। ये विद्यालय संघ पर आश्रित थे। संघ सर्वोपरि थे, 8 वर्ष की आयु में पब्बज्जा संस्कार के साथ बच्चे का मठ अथवा विहार में प्रवेश होता था।

बौद्धकालीन शिक्षा की शिक्षण विधि:- बौद्धकालीन शिक्षा में व्याख्यान शिक्षण विधि, वाद-विवाद विधि, पर्यटन विधि, सूत्र विधि एवं स्वाध्याय विधि आदि शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था।

बौद्धकालीन शिक्षा की वर्तमान में प्रांसगिकता:

बौद्धकालीन शिक्षा वर्तमान में भी प्रासंगिक है। बौद्धकालीन शिक्षा मानव कल्याण हेतु है। बुद्ध ने अपने व्यक्तिगत अनुभव से दुःख को पहचाना एवं इससे मुक्ति हेतु सही मार्ग बताया। बुद्ध के बताये मार्ग पर चलकर मनुष्य अपने दुःखों से मुक्ति पा सकता है। मनुष्य का मनुष्य के प्रति भेदभाव बौद्धकालीन शिक्षा के माध्यम से दूर किया जा सकता है। बुद्ध का पंचशील, मनुष्य को सत्य बोलने, झूठ न बोलने, किसी स्त्री से व्यभिचार न करने, जीव हत्या न करने तथा मादक पदार्थों से दूर रहने की प्रतिज्ञा करता है। इन प्रतिज्ञाओं का पालन करते हुए व्यक्ति अपने

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

आप को श्रेष्ठ बना सकता है और बुद्ध के बताये अष्टांगिक मार्ग पर चलकर मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

निष्कर्ष

जैन और बौद्ध दर्शन, दोनों ने ही शिक्षा को समाज और व्यक्तित्व विकास का माध्यम माना है। हालांकि, इनके दृष्टिकोण में भिन्नताएँ हैं, परंतु दोनों की शिक्षा प्रणाली आज भी प्रासंगिक है। इनसे प्रेरणा लेकर आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, ध्यान, और सामाजिक कल्याण को अधिक महत्व दिया जा सकता है। यह अध्ययन यह दर्शाता है कि जैन और बौद्ध दर्शन के शिक्षा के सिद्धांत न केवल अतीत में बल्कि वर्तमान में भी मानवता के लिए प्रेरणादायक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा चन्द्रधर. भारतीय दर्शन: आलोचन और अनुशीलन. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; 2004.
2. शास्त्री कैलाश चन्द्र. जैन सिद्धांत. वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ; 2009.
3. टाटिया नथमल. स्टडीज इन जैन फिलोसोफी. बनारस: मोतीलाल बनारसीदास; 1951.
4. मेहता मोहन लाल. जैना फिलोसोफी. वाराणसी: पी. वी. रिसर्च इंस्टिट्यूट; 1971.
5. जैन धर्म चंद. जैन धर्म-दर्शन: एक अनुशीलन. जयपुर: प्राकृत भारती अकादमी; 2015.
6. जैन शिल्पा. वर्तमान में जैन धर्म की प्रासंगिकता. राजस्थान पत्रिका; 2024 नवम्बर 22.
7. पाठक रमेश प्रसाद, मिश्रा सुजीत कुमार. जैन शिक्षा दर्शन. दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स; 2022.
8. ओड लक्ष्मीलाल के. शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2010.
9. वर्तमान परिवेश में बौद्ध धर्म अधिक प्रासंगिक. दैनिक जागरण; 2013 दिसम्बर 18.
10. गुगनानी प्रवीण. भगवान गौतम बुद्ध ने विश्व को पंचशील और निर्वाण का मार्ग दिखाया. प्रभा साक्षी; 2020 मई 7.
11. पाण्डेय अजय कुमार. बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम. नई दिल्ली: प्रतिभा प्रकाशन; 2006.
12. शर्मा कमल कान्त. वर्तमान समय में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाईड रिसर्च. 2017 जून; वॉल्यूम-03(07).
13. इलयास सुचिता. बौद्ध कालीन शिक्षा दर्शन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी उपादेयता. रिव्यू ऑफ रिसर्च. 2018 मई; वॉल्यूम-07(08).
14. सेनगुप्ता वृंदा. बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेज इन सोशल साइंसेज. 2016 जनवरी-मार्च; वॉल्यूम-04(01).
15. कौर किरण. प्राचीन भारतीय शिक्षा में बौद्ध कालीन शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ऐकडेमिक वर्ल्ड. 2021 अगस्त; वॉल्यूम-01(01).
16. चौधरी मनोज. इक्कीसवीं सदी में बौद्ध दर्शन की शिक्षा में उपादेयता. IOSR जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज एंड सोशल साइंस. 2018 अगस्त; वॉल्यूम-23(08).

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 महेन्द्र कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/